महात्मा गाँधी

एक वैचारिक आयाम एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

नमूना • SAMPLE

SAMPLE

महात्मा गाँधी

एक वैचारिक आयाम एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता

प्रधान संपादक

डॉ0 निशा सिंह

प्राचार्या, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

संपादक

डॉ0 धीरज सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

नमूना • SAMPLE

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

महात्मा गाँधी

एक वैचारिक आयाम एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता

संस्करण : 2020
© सम्पादक
ISBN: 978-81-947936-6-3

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक एवं सम्पादक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

सम्पादकीय

किसी राष्ट्र की महानता वहां की सभ्यता–संस्कृति, धर्म–दर्शन, जीवन शैली, मूल्य, आदर्श, मान्यताओं और परम्पराओं में परिलक्षित होती है। महानता के इन कारकों के पीछे उस राष्ट्र के महापुरुषों की जीवन दृष्टि होती है। उनकी इस जीवन दृष्टि के पीछे उनका उदार चरित्र, विचारों की गम्भीरता, सूक्ष्म व सर्वग्राही वैचारिक दृष्टि, परोपकारी व संवेदनशील हृदय, एवं मानव, समाज, राष्ट्र व विश्व कल्याण हेतु सर्वस्व अर्पण करने की भावना का मजबूत आधार होता है। राष्ट्र के ये महापुरुष राष्ट्र की गरिमा, सम्मान और समृद्धि का सम्पोषण, संरक्षण और संवर्धन करते हैं।

हमारा देश भारत भी विश्व के उन महानतम देशों में से एक है जहाँ समय–समय पर, महापुरुषों ने अवतरित होकर राष्ट्र के यश में वृद्धि की। महात्मा गाँधी भी माँ भारती के ऐसे ही एक सच्चे सपूत हैं जिन्होंने भारतीय स्वाधीनता संग्राम को निर्देशित करते हुए भारतीयों में एक नवीन चेतना, ऊर्जा और जागृति का संचार किया जिसके परिणामस्वरूप स्वाधीनता संग्राम के महायुद्ध में सामान्य भारतीय जनों की सहभागिता भी सुनिश्चित हो सकी।

महात्मा गाँधी ने केवल राजनेता के रूप में ही नहीं वरन् एक समाज सुधारक, दार्शनिक, शिक्षा शास्त्री, अर्थशास्त्री, समाज शास्त्री, लेखक, पत्रकार आदि अनेक रूपों देश की सेवा की। उन्होंने केवल वैचारिक आधार ही नहीं प्रदान किया वरन् व्यावहारिक स्तर पर उतर कर उन्हें यथार्थ रूप देने का भी प्रयत्न किया।

गांधीजी देश और काल की सीमाओं से परे हैं। वे मात्र भारतवर्ष के ही नहीं, वरन् सम्पूर्ण विश्व की थाती हैं। उनके विचार उनके समय में जितने प्रासंगिक थे उतने ही प्रासंगिक आज भी हैं। उनकी वैचारिक विरासत विश्व के लिए एक धरोहर है।

गांधीजी की 150 वीं जयंती के उपलक्ष्य में *'महात्मा गाँधी : एक वैचारिक आयाम एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता'* नामक शीर्षक से इस पुस्तक को सम्पादित किया गया है। इस पुस्तक में हमारा कुछ भी नहीं है। इस पुस्तक में कुल 46 लेखों को संकलित किया गया है, जो गांधीजी के विविध वैचारिक आयामों पर आधारित हैं। इस पुस्तक के माध्यम से उनके विचारों को पुनः वर्तमान वैश्विक सन्दर्भ में देखने का प्रयास किया गया है। निश्चित रूप से यह पुस्तक महात्मा गांधीजी के विचारों के अध्येताओं और शोधार्थियों के

SAMPLE

लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

अपने आलेख के माध्यम से सहयोग देने के लिए सही लेखकों को धन्यवाद और आभार। विभिन्न्न लेखकों के गांधीजी के विषय में अभिव्यक्त इन विचारों को पुस्तकाकार रूप देने के लिए अखंड पब्लिशिंग हाउस का भी धन्यवाद एवं आभार।

संपादक
डॉ0 धीरज सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

प्रधान संपादक
डॉ0 निशा सिंह
प्राचार्या,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

नमूना • SAMPLE

सहायक–सूची

1. **डॉ॰ धीरज सिंह**, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गजियाबाद, उत्तर प्रदेश।
2. **डॉ॰ रवीन्द्र प्रभात**, वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादकः परिकल्पना समय, अलीगंज, लखनऊ –226024।
3. **डॉ॰ सुशीला सिंह**, एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी विभाग) भगवानदीन आर्य कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखीमपुर खीरी।
4. **डॉ॰ कल्पना दूबे**, एसोसिएट प्रोफसर (हिंदी विभाग), एम.एम.एच. कॉलेज, गाजियाबाद।
5. **डॉ॰ सत्या सिंह**, पूर्व पुलिस अधिकारी, लखनऊ।
6. **डॉ॰ लवलेश दत्त**, (प्रधानाचार्य) बी.आर. जीनियस इंटरनेशनल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल, नवाबगंज, बरेली (उ.प्र.)।
7. **डॉ॰ नरेश कुमार**, प्रवक्ता (शिक्षा), जिलाशिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली।
8. **डॉ॰ सरोज बाला श्याग विश्नोई,** सहा. प्राध्यापक, गृहविज्ञान, शा.विवेकानन्द स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मनेन्द्रगढ़, जिला – कोरिया (छ.ग.)।
9. **डॉ॰ सुरंगमा यादव**, असि0 प्रो0 (हिंदी), महामाया राजकीय महाविद्यालय महोना, लखनऊ।
10. **डॉ॰ रमेश रोहित**, सहायक प्राध्यापक – थेरवाद साँची बौद्ध–भारतीय ज्ञान अध्ययन विश्वविद्यालय (म.प्र)।
11. **डॉ॰ विभा लक्ष्मी**, सह आचार्या, शिक्षा संकाय, स्वामी विवेकानन्द सुभारती विश्व विद्यालय, मेरठ।
12. **डॉ॰ विशाल भारद्वाज**, असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर।

नहीं SAMPLE

13. **डॉ॰ अनीता**, असिस्टेंट प्रोफेसर, न्यू ऐरा कॉलेज ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलोजी गाजियाबाद।

14. **डॉ॰ प्रवीण कुमार न. चौगुले**, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्रीमती कस्तुरबाई वालचंद महाविद्यालय, सांगली, महाराष्ट्र।

15. **डॉ॰ संजय कुमार स्वर्णकार**, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, उदय प्रताप कॉलेज वाराणसी।

16. **प्रो॰ रामसेवकराम भगत**, सहायक प्राध्यापक (इतिहास), शासकीय श्याम प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय सीतापुर, जिला सरगुजा (छ.ग.)।

17. **डॉ॰ प्रगति दिनेश नरखेड़कर**, सहयोगी प्राध्यापक, एस. आर. एम. समाजकार्य महाविद्यालय चंद्रपुर. (महाराष्ट्र)।

18. **डॉ॰ सपना रल्हन**, असिसटेन्ट प्रोफेसर, एजकूशेन डिपाटमेंट, मेवाड़ इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, गाजियाबाद।

19. **डॉ॰ सुषमा वर्मा,** सहायक अध्यापक, पूर्व माध्यमिक विद्यालय मंचितपुर।

20. **रजनी शर्मा**, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, एजुकेशन डिपाटमेंट, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

21. **सीमा शर्मा**, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, एजुकेशन डिपाटमेंट मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

22. **गुड़िया चौधरी**, सहायक प्रोफेसर, गुरु नानक महाविद्यालय, वेलाचेर्री. चेन्नई, 42 तमिलनाडु।

23. **कुमार० सुविद्य धारवाडकर**, (शोधकर्ता) पार्वतीबाई चौगुले कला एवं विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त) मडगांव गोवा– भारत।

24. **विवेक कुमार मौर्य**, शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, 273009।

25. **अभिषेक कुमार**, यूजीसी–जेआरएफ, राजनीति विज्ञान विभाग, तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय (बिहार)।

26. **मोनिका**, शोधार्थी, हिन्दी विभाग, डी0 जे0 कॉलेज, बड़ौत।

27. **सुनील कुमार तोमर**, शोधार्थी, शिक्षा विभाग, चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।

28. **संदीप कुमार**, शोध छात्र–शिक्षा शास्त्र, आईएएसई डीम्ड विश्वविद्यालय, चूरू राजस्थान।

29. **कमलेश**, एम0फिल0 छात्रा, महालक्ष्मी कालेज फार गर्ल्स दुहाई।

नमूना SAMPLE

30. **कंचन लता**, एम एड छात्रा मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद।

31. **Dr. Meena Bhandari**, Head, ICFAI Education School, ICFAI University – Rajawala Road, Hope Town Selaqui, Dehradun.

32. **Dr. Santosh Sharma**, Professor, Faculty of Education, Swami Vivekananda, Subharti University, Meerut.

33. **Dr. Amita**, (Prof. and Head) Aster College of Education.

34. **Dr. Rekha Sharma**, Assitant Professor, Modern College of Professional Studies, Mohan Nagar, Ghaziabad.

35. **Dr. Bhavna Singh**, Asst. Professor (B.Ed), S.M.P. Govt. Girls P.G. College, Meerut.

36. **Dr. Kiran Joshi**, Assistant Professor, Department of Education, Modern College of Professional Studies, Mohan Nagar, Ghaziabad.

37. **Dr. Vinita M Chaudhary**, Assistant Professor, NECST, Ghaziabad**.**

38. **Dr. Reena Agarwal**, Assistant Professor, Ganpati Institute of Science and Technology Mohan Nagar, Ghaziabad.

39. **Anuradha Singh**, Academic Coordinator, Bal Mander Sr. Sec. School, Delhi.

40. **Amar Jyoti**, Asst. Prof. (incharge-B.Ed dept), S M P Govt. Girls P. G. College, Meerut.

41. **Ms. Garima Bansal**, Assistant Professor, SDPG College, Ghaziabad

42. **Ms. Neha Bansal,** Assistant Professor, MCPS, Ghaziabad.

43. **Indu Singh**, Assistant Professor, Kamal Institute of Higher, Education and Advanced, Technology (KIHEAT).

44. **Mr. Ashish Singh**, Assistant Professor, Department of Education, Modern College of Professional Studies, Mohan-Nagar, Ghaziabad.

45. **Palash Saha**, Assistant Professor, Ragendra Academy for Teacher Education, Gopalpur, Durgapur-713212, WB.

46. **Vishesh Kumar Pandey**, Assistant Professor, S. M. College, Chandausi, M. J. P. Rohilkhand University, Bareilly.

47. **Babita Chaudhary**, Asst. Professor, Dept of Teacher Education, Mewar Institute of Management, Vasundhara, Gha ziabad, UP.

48. **Md. Hasnuzzaman Miah**, PhD Scholar, Central University of Odisha, Koraput.

49. **Dr. Santosh Kumari**, Associate Professor and Head, (Department of Sociology), J.K.P. P.G. College, Muzaffarnagar.

SAMPLE

SAMPLE

विषय–सूची

	सम्पादकीय	*v*
	सहायक सूची	*vii*
1.	वर्धा शिक्षा योजना–एक परिचय —*डॉ॰ धीरज सिंह*	1
2.	कोरोना काल में महात्मा गांधी की अहिंसात्मक विचारधारा की प्रासंगिकता —*डॉ॰ रवीन्द्र प्रभात*	9
3.	गाँधी चिंतन (सत्य के संदर्भ में) —*डॉ॰ सुशीला सिंह*	14
4.	गांधीजी और प्रेमचंद —*डॉ॰ कल्पना दूबे*	19
5.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में महात्मा गांधी के चिन्तन की प्रासंगिकता —*डॉ॰ सत्या सिंह*	23
6.	गांधीदर्शन के निर्मायक तत्त्व —*डॉ॰ लवलेश दत्त*	29
7.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में महात्मा गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता —*डॉ॰ नरेश कुमार*	39
8.	महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व एवं विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता —*डॉ॰ सरोज बाला श्याग विश्नोई*	47
9.	गाँधी की प्रिय हिन्दी आज भी बंदी —*डॉ॰ सुरंगमा यादव*	53
10.	महात्मा गाँधी का समाज दर्शन : एक चिंतन —*डॉ॰ रमेश रोहित*	59

NOT A SAMPLE

11.	गाँधी जी की कौशल युक्त शिक्षा की वर्तमान में प्रासंगिकता *—डॉ॰ विभा लक्ष्मी*	64
12.	अहिंसा की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता *—डॉ॰ विशाल भारद्वाज*	70
13.	महात्मा गांधी की शिक्षानीति *—डॉ॰ अनीता*	78
14.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में गांधी जी के सदाचार एवं नैतिक शिक्षा की प्रासंगिकता *—डॉ॰ प्रवीणकुमार न. चौगुले*	85
15.	महात्मा गांधी की शिक्षा नीति *—डॉ॰ संजय कुमार स्वर्णकार*	93
16.	गाँधी जी का नैतिक दर्शन *—प्रो॰ रामसेवकराम भगत*	99
17.	महात्मा गाँधी और ग्रामीण विकास की विचारधारा *—डॉ॰ प्रगति दिनेश नरखेड़कर*	105
18.	महात्मा गांधी की अहिंसावादी विचारधारा *—डॉ॰ सपना रल्हन*	112
19.	प्राथमिक शिक्षा में बुनियादी शिक्षा का वर्तमान स्वरुप *—डॉ॰ सुषमा वर्मा*	118
20.	गाँधी–दर्शन एक समेकीकृत दृष्टि *—रजनी शर्मा, सीमा शर्मा*	123
21.	वर्तमान युग के सामाजिक जीवन में गाँधी विचारधारा की आवश्यकता *—गुड़िया चौधरी*	128
22.	प्रेमचंद रचित रंगभूमि उपन्यास के पात्रों में गांधी दर्शन *—कुमार० सुविद्य धारवाडकर*	133
23.	वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में महात्मा गाँधी के चिन्तन की प्रासंगिकता *—विवेक कुमार मौर्य*	139
24.	गाँधीजी के दर्शन की वर्तमान युग में प्रासंगिकता *—अभिषेक कुमार*	143
25.	महात्मा गांधी की शिक्षादृष्टि *—मोनिका, सुनील कुमार तोमर*	150

नमूना SAMPLE

26.	महात्मा गाँधी और भारतीय शिक्षा प्रणाली *—संदीप कुमार*	157
27.	महात्मा गाँधी का सामाजिक चिन्तन *—कमलेश*	165
28.	महात्मा गाँधी की रामराज्य की परिकल्पना *—कंचन लता*	171
29.	Mahatma Gandhi's Educational Ideology –Its Relevance in The Present Scenario *—Dr. Meena Bhandari*	179
30.	Mahatma Gandhi ji ki Shiksha Niti *—Dr. Santosh Sharma*	186
31.	Gandhi's Contribution in the Fight Against Untouchability *—Dr. Santosh Kumari*	193
32.	Pandemic and Resurgence of Mahatma Gandhi Philosophy *—Dr. Amita*	196
33.	Education Philosophy of Mahatma Gandhiji *—Dr. Rekha Sharma*	201
34.	Moral value Education of Mahatma Gandhiji *—Dr. Bhavna Singh*	206
35.	Nai Talim: A Lifelong, Creative and Innovative Process *—Dr. Kiran Joshi*	212
36.	Trusteeship Concept as A Spiritual Economy of Humanity and Mahatma Gandhi *—Dr. Vinita M Chaudhary*	218
37.	Gandhian Principle in Context of Global Peace *—Dr. Reena Agarwal*	226
38.	Mahatma Gandhi and National Movements *—Anuradha Singh*	233
39.	Back to Gandhian Philosophy: Need of The Hour *—Amar Jyoti*	239
40.	The Relevance of TheMahatma Gandhi's ideas related to Sarvodaya and village development *—Ms. Garima Bansal, Ms Neha Bansal*	244

SAMPLE

41. Educational Thoughts of Mahatma Gandhi and its Relevance Today 249
—*Indu Singh*

42. Relevance of Basic Teaching Policy of Mahatma Gandhi in the Present Context 256
—*Mr. Ashish Singh*

43. Gandhi's Educational Thoughts Influence on Indian Education System: An Overview 263
—*Palash Saha*

44. Mahatma Gandhi: The Master of Changing 'World' with 'Word' 270
—*Vishesh Kumar Pandey*

45. Gandhiji and His Concept of Ram Rajya 278
—*Babita Chaudhary*

46. Gandhi's Philosophy of Life and Educational Thoughts: A Qualitative Study 282
—*Md. Hasnuzzaman Miah*

नमूना • SAMPLE

1

वर्धा शिक्षा योजना–एक परिचय

डॉ0 धीरज सिंह

भूमिका –

भारत विश्व के ऐसे महान देशों में अपना स्थान रखता है जिसकी अपनी सुविकसित संस्कृति है, दीर्घ कालीन इतिहास है, महापुरुषों के अवतरण की सुस्पष्ट परम्परा है और विश्व को मार्गदर्शन देने में सक्षम सर्वहितकारी धर्म व दर्शन की प्राचीन विरासत। भारत की महानता का इन सबसे भी बढ़कर एक कारण है ऋषि– मुनि और संत मनीषियों द्वारा स्थापित मूल्य आधारित आदर्शवादी प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली। राजनैतिक व सामाजिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप भारतीय शिक्षा व्यवस्था में भी समय–समय पर परिवर्तन होते रहे। भारत में मुस्लिम शासन स्थापित होने के पश्चात् भारतीय शिक्षा व्यवस्था में तीव्रता के साथ क्षरण प्रारम्भ हो गया।

ब्रिटिश सत्ता स्थापित होने के बाद तो भारत की स्थिति पूर्ण रूप से दूसरों पर आश्रित गुलाम देश की हो गई। भारतीय शिक्षा प्रणाली नष्ट प्राय हो गई। अंग्रेजों ने अपने हित को साधने वाली शिक्षा व्यवस्था को भारत में प्रचलित किया जो भारतीय संस्कृति और परंपरा से पूर्णतः उलट थी। अनेक भारतीय मनीषियों और ब्रिटिश विचारकों ने बदली हुई परस्थितियों में भारत की शिक्षा व्यवस्था के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किए जो स्वतंत्र रूप से या विभिन्न आयोगों और समितियों के प्रतिवेदन के रूप में समय–समय पर प्राप्त हुए। इनके द्वारा पुनः भारत में शिक्षा व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास हुआ। 20वीं सदी के पूर्वार्ध में महात्मा गाँधी का पदार्पण भारत में हुआ। उन्होंने भारतीय राजनीति और समाज का गहनता से अध्ययन करते हुए भारत की दशा और दिशा सुधारने के लिए राजनैतिक,

SAMPLE

सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक आदि सभी पक्षों पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए अंत्योदय, ट्रस्टीशिप, असहयोग आंदोलन, सत्याग्रह, राम राज्य, बुनियादी शिक्षा जैसी मार्गदर्शी अवधारणाओं को जनमानस तक पहुँचाया।

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के विकास का आधार होती है। शिक्षा के बिना किसी राष्ट्र के स्वतंत्रता, स्वावलम्बन, आत्मनिर्भरता और विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इस तथ्य से गांधीजी भलीभांति परिचित थे। इसीलिए उन्होंने परतंत्र भारत के स्वाधीनता संग्राम के संघर्ष के साथ ही सभी भारतीयों को उचित शिक्षा उपलब्ध हो सके, इस पर भी विचार किया। उनके शैक्षिक दर्शन का एक भाग बुनियादी शिक्षा का प्रत्यय था जिसे यथार्थ रूप देने के लिए वर्धा शिक्षा सम्मलेन का आयोजन अक्टूबर 1937 में किया गया था। इस सम्मलेन में प्रस्तुत शिक्षा योजना को देश में वर्धा शिक्षा योजना के नाम से भी जाना जाता है। प्रस्तुत शोध आलेख में वर्धा शिक्षा सम्मलेन के परिणाम स्वरुप देश के समक्ष आई वर्धा शिक्षा योजना का संक्षेप में अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तुत शोध आलेख का शीर्षक –

प्रस्तुत शोध आलेख का शीर्षक है *–वर्धा शिक्षा योजना– एक परिचय।*

शोध आलेख का उद्देश्य –

आज भारतीय शिक्षा व्यवस्था संक्रमण काल से गुजर रही है। परिवर्तन के इस दौर में भारतीय शिक्षा व्यवस्था राष्ट्र के उन लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल हो रही है जो हमारे राष्ट्र नायकों द्वारा निर्धारित किया गया है। प्रस्तुत शोध आलेख का उद्देश्य वर्धा शिक्षा योजना, जिसके आधार पर बुनियादी शिक्षा विकसित की गई, का परिचयात्मक अध्ययन करना है। वर्तमान परिदृश्य में जिस प्रकार शिक्षा व्यवस्था की स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ती जा रही है, उन परिस्थितियों में एक बार पुनः गांधीजी द्वारा स्थापित बुनियादी शिक्षा का अध्ययन नए परिप्रेक्ष्य में करना आवश्यक हो जाता है। इन बातों को ध्यान में रखकर यह शोध आलेख तैयार किया गया है।

ब्रिटिशकालीन शिक्षा व्यवस्था पर गांधीजी का मत –

तत्कालीन भारत में प्रचलित शिक्षा व्यवस्था जो भारत के अंग्रेज शासकों द्वारा भारतीयों पर थोपी गई थी, वह भारतीयों को केवल अंग्रेजों की सेवा हेतु तत्पर बाबू वर्ग के रूप में तैयार कर रही थी। वह न तो भारतीयों में स्वाभिमान की भावना भरती थी और न ही उन्हें स्वावलम्बी, स्वतंत्र विचारों वाले प्रबुद्ध नागरिकों में बदल रही थी। लार्ड मैकाले द्वारा तैयार यह शिक्षा पद्धति भारतीयों को अंग्रेजों का स्वामिभक्त सेवक, पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरणकर्ता और भारतीय संस्कृति, साहित्य, धर्म–दर्शन व शिक्षा पद्धति के प्रति हेय दृष्टिकोण रखने वाले भूरी चमढ़ी वाले अंग्रेज के रूप में परिवर्तित कर रही थी।

गांधीजी ने इस शिक्षा व्यवस्था की खामियों को बखूबी समझा और पाया कि यह शिक्षा भारतीयों के लिए सर्वथा अनुपयुक्त है। वर्धा शिक्षा सम्मलेन में वर्धा शिक्षा योजना का प्रस्ताव प्रस्तुत करते उन्होंने कहा था – *"शिक्षा की वर्तमान पद्धति किसी भी तरह देश*

SAMPLE

की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर सकती। उच्च शिक्षा की तमाम शाखाओं में अंग्रेजी भाषा को माध्यम बना देने के कारण उसने उच्च शिक्षा पाए हुए मुट्ठी भर लोगों तथा अनपढ़ जनसमुदाय के बीच एक स्थायी दीवार सी खड़ी कर दी है। इसकी वजह से जन साधारण तक छन–छन कर ज्ञान के जाने में बड़ी रुकावट पड़ गई है। अंग्रेजी को इस तरह अत्यधिक महत्व देने के कारण शिक्षित लोगों पर इतना अधिक भार पड़ गया कि प्रत्यक्ष जीवन के लिए उनकी मानसिक शक्तियां पंगु हो गई हैं और वे देश में ही विदेशियों की भांति बेगाने बन गए हैं।"

उन्होंने भारतीयों के लिए एक नवीन शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता को महसूस किया और अपने वैचारिक अनुष्ठान के माध्यम से वर्धा शिक्षा सम्मलेन में अपनी बुनियादी शिक्षा की योजना को प्रस्तुत किया जिसे देश में वर्धा शिक्षा योजना के नाम भी जाना जाता है।

गांधीजी की बुनियादी शिक्षा का परिचय –

महात्मा गाँधी को विश्व में एक महान राजनेता के साथ–साथ एक आदर्श दार्शनिक, लोक चिंतक, गंभीर विचारक, समर्पित समाज सेवी, कुशल शिक्षा शास्त्री आदि रूपों में जाना जाता है। एक अनुभवी, प्रबुद्ध और कुशल राजनेता के रूप में भारत में उनका आगमन 1915 में हुआ। इससे पूर्व दक्षिण अफ्रीका में अंग्रेजी सरकार की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध संघर्ष करते हुए गाँधी जी कई आंदोलनों का नेतृत्व कर चुके थे। 1915 से लेकर उनके जीवन के अंतिम पड़ाव तक का काल भारतीय राजनीति में गाँधी युग के नाम से जाना जाता है।

भारत आने के पश्चात् उन्होंने अपने जीवन का हर एक पल राष्ट्र सेवा हेतु अर्पित कर दिया। राष्ट्र व समाज के प्रत्येक पक्ष को उन्होंने अपने विचारों से प्रभावित किया। उन्होंने मात्र विचार ही नहीं दिए वरन् उनको कार्यरूप में परिणीत करने किए लिए व्यावहारिक रूप से वास्तविक धरातल पर उतर कर उसके लिए प्रयास भी किया। तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था जो पूर्णरूपेण उपेक्षित थी उस पर भी गाँधी जी ने पूरी गंभीरता के साथ विचार किया। उनके समस्त शैक्षिक विचारों को उनके द्वारा प्रदत्त बुनियादी शिक्षा की रूपरेखा में देखा जा सकता है। *"...गांधीजी के जीनव–पर्यन्त चले सत्य के अन्वेषण एवं राष्ट्र के निर्माण हेतु सक्रिय प्रयोगों के माध्यम से लम्बे समय तक विचारों के गहन मंथन के परिणामस्वरूप नयी तालीम का दर्शन एवं प्रक्रिया का प्रादुर्भाव हुआ जो केवल भारतवर्ष ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानव समाज को एक नयी दिशा देने में सक्षम था।"*

बुनियादी शिक्षा गांधीजी की एक ऐसी शैक्षिक योजना थी जिसमे देश की तत्कालीन परिस्थितियों में देश को स्वावलम्बी व शिक्षित बनाने हेतु भारतीयों के लिए प्राथमिक शिक्षा का स्वरुप कैसा होना चाहिए? इस विषय पर गंभीर व व्यापक चिंतन था। *"महात्मा गांधी की भारत को जो देन है उसमें बुनियादी शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण एवं बहुमूल्य है। इसे वर्धा योजना, नयी तालीम, बुनियादी तालीम तथा बेसिक शिक्षा के नामों से भी जाना जाता है।"*

वर्धा शिक्षा सम्मलेन–

"सन 1937 में गांधीजी वर्धा में थे। हाईस्कूल (वर्तमान नवभारत स्कूल) की रजत जयंती का समारोह 22 और 23 अक्टूबर, 1937 को होने वाला था।[4]" गांधीजी को इस कार्यक्रम में सभापति के तौर पर आमंत्रित किया गया। वर्धा शिक्षा सम्मलेन के विषय में गांधीजी ने स्वयं लिखा था – *"वर्धा का मारवाड़ी विद्यालय जिसका नाम हाल ही में बदल कर नवभारत विद्यालय कर दिया गया है, अपनी रजत जयंती मनाने जा रहा है। जयंती के साथ–साथ जिस प्रकार की शिक्षा योजना के प्रतिपादन का मैं यत्न कर रहा हूँ, उस पर चर्चा करने के लिए देश के राष्ट्रीय मनोवृत्ति वाले शिक्षाशास्त्रियों की बुलाने का विचार भी उत्सव के आयोजकों को सूझा। परिषद् निमंत्रित करना ठीक होगा या नहीं इस सम्बन्ध में विद्यालय के मंत्री श्री मन्नारायण अग्रवाल ने मेरी सलाह मांगी और यदि विचार पसंद हो तो उसका अध्यक्ष पद ग्रहण करने के लिए भी प्रार्थना की। मुझे दोनों चीजें अच्छी लगी। जिसलिए यह परिषद् वर्धा में आगामी 22 व 23 अक्टूबर को हो रही है।[5]"*

श्री मन्नारायण अग्रवाल जी आग्रह को गाँधीजी ने सहर्ष स्वीकारते हुए अपनी अनुमति दी जिसके परिणामस्वरूप आयोजन समिति का यह शिक्षाशास्त्रियों के अखिल भारतीय सम्मलेन के रूप में संपन्न हुआ। इस सम्मलेन को वर्धा शिक्षा सम्मलेन के नाम से भी कहा जाता है। इस सम्मलेन का सभापतित्व स्वयं गांधीजी ने किया था। इस सम्मलेन में गांधीजी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में देश में प्रचलित शिक्षा पद्धति की कटु आलोचना करते हुए कहा था – *"देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति किसी भी तरह देश की आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकती है।"* उन्होंने तत्कालीन प्रचलित शिक्षा को देश के लिए हानिप्रद और अपव्यय पूर्ण बताया। अपने बुनियादी शिक्षा सम्बंधी विचारों को गांधीजी ने सम्मेलन में प्रस्तुत किया जिस पर विचार–विमर्श करने के पश्चात् निष्कर्ष के रूप में निम्नलिखित प्रमुख बिंदु सामने आये –

- सम्पूर्ण देश में 7 से 14 आयुवर्ग के सभी बच्चों के लिए निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध हो।
- प्राथमिक शिक्षा सभी के लिए एक समान हो।
- यह शिक्षा ग्रामीण जनसंख्या के अनुरूप होनी चाहिए।
- इस शिक्षा में गणित, भाषा आदि के शिक्षण के साथ ही बच्चों को व्यक्तिगत स्वच्छता, स्वास्थ्य रक्षा, भोजन के नियम, माता–पिता के कार्यों में सहयोग करने की शिक्षा दी जानी चाहिए।
- शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होनी चाहिए।
- इस शिक्षा में बच्चों को कृषि, भारतीय हस्त कौशलों की शिक्षा दी जानी चाहिए।
- बच्चों को समस्त शिक्षा हस्त कौशलों के माध्यम से दी जानी चाहिए और शिक्षा को स्वावलम्बी बनाना चाहिए।

वर्धा शिक्षा सम्मलेन में पारित प्रमुख प्रस्ताव –

उपरोक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए वर्धा शिक्षा सम्मलेन में निम्न लिखित प्रमुख प्रस्ताव पारित किए गए –

- देश के सभी 7 से 14 वर्ष आयुवर्ग के बच्चों के लिए अनिवार्य व निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था हो।
- *"शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा को रखा जाए।*
- *बच्चे की सम्पूर्ण शिक्षा का केंद्र कोई शिल्प– हाथ का काम हो।*
- *सम्मलेन यह आशा करता है कि शिक्षा की इस प्रणाली से शनैः शनैः शिक्षकों वेतन भी निकल आएगा।"*
- इसका पाठ्यक्रम बच्चों की अपनी आवश्यकताओं के आधार पर विकसित किया जाए।

जाकिर हुसैन समिति का गठन–

वर्धा में हुए इस शिक्षा सम्मलेन में बुनियादी शिक्षा हेतु जो प्रस्ताव पारित किए गए थे, उसे व्यवस्थित रुप देने के लिए जामिया मिलिया इस्लामिया विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में एक समिति को गठित किया गया, जिसे जाकिर हुसैन समिति कहा गया। समिति के सदस्य थे –

- *डॉ. जाकिर हुसैन (अध्यक्ष)*
- *श्री आर्यनायकम (संयोजक)*
- *श्री ख्वाजा गुलाम सैयदुद्दीन*
- *श्री विनोवा भावे*
- *श्री काकासाहेब कालेलकर*
- *श्री किशोर लाल मशरूवाला*
- *श्री जे. सी. कुमारप्पा*
- *श्री श्रीकृष्णदास जाजू*
- *प्रो. के. टी. शाह*
- *श्रीमती आशा देवी*

कमेटी और भी नाम शामिल कर सकती है।[8]

बुनियादी शिक्षा की एक राष्ट्रीय योजना तैयार करने का गुरुतर दायित्व इस समिति को सौंपा गया। बुनियादी शिक्षा की योजना कैसे और किस प्रकार फलीभूत होगी? प्रतिवर्ष विद्यार्थी इसमें किन–किन विषय वस्तुओं का अध्ययन करेंगे ? यह सब तय करने की जिम्मेदारी गांधीजी ने इस समिति को दी। उनके ही शब्दों में – *"इस योजना पर*

नमूना SAMPLE

व्यावहारिक अमल किस तरह हो सकता है और लड़के व लड़कियों को एक के बाद दूसरे वर्ष में क्या–क्या सीखना होगा, यह तो हम डॉ. जाकिर हुसैन समिति के परिश्रम पर से ही जान सकेंगे।[9]"

जाकिर हुसैन समिति का प्रतिवेदन –

"बहुत विचार मंथन के परिणाम स्वरुप *समिति ने अपना पहला प्रतिवेदन दिसंबर, सन 1937 में और दूसरा प्रतिवेदन अप्रैल, सन 1938 में प्रस्तुत किया।*[10]"

इस प्रकार जाकिर हुसैन समिति ने डेढ़–दो महीने में अपना प्रतिवेदन प्रकाशित किया उसके कुछ समय पश्चात् एक विस्तृत अभ्यासक्रम तैयार कर देश के समक्ष प्रस्तुत किया। समिति द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन और विस्तृत अभ्यासक्रम को मिला कर 'बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा' नाम से एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया। इस पुस्तक की प्रस्तावना स्वयं महात्मा गांधीजी द्वारा लिखी गई थी।

समिति द्वारा तैयार पहले प्रतिवेदन में तत्कालीन शिक्षा पद्धति की कमियों, वर्धा शिक्षा योजना के सिद्धांतों, उद्देश्यों, शिक्षकों व उनके प्रशिक्षण, विद्यालयों के संगठन, प्रशासन, परीक्षा के नियम तथा कताई–बुनाई को केंद्रीय या मुख्य हस्तशिल्प मान कर उसके पाठ्यक्रम का विस्तार पूर्वक वर्णन किया। समिति द्वारा प्रस्तुत किए गए दूसरे प्रतिवेदन में कृषि, मिट्टी का काम, लकड़ी का काम सहित कुछ अन्य हस्तशिल्पों को पाठ्यक्रम में शामिल करते हुए अध्ययन के सभी अन्य विषयों का सविस्तार वर्णन किया गया। साथ ही यह मत प्रकट किया गया कि हस्तशिल्प का अन्य विषयों के साथ सहसम्बन्ध होना चाहिए।

बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम

बुनियादी शिक्षा के जो उद्देश्य निर्धारित किए गए थे, उनको पूरा करने के लिए तथा पारित प्रस्तावों को अमली जामा पहनाने के लिए जाकिर हुसैन समिति द्वारा पाठ्यक्रम की एक विस्तृत रूपरेखा तैयार की गई। इस पाठ्यक्रम में गांधीजी के विचारों की पूर्ण झलक मिलती है।

बुनियादी शिक्षा के पाठ्यक्रम के विषय में गांधीजी ने स्वयं लिखा है– *"हमारी प्राथमिक शिक्षा में हमें इतनी चीजों का समावेश करना चाहिए –*

- *मातृभाषा*
- *अंकगणित*
- *प्राकृतिक विज्ञान*
- *समाज शास्त्र*
- *भूगोल और इतिहास*
- *अंग–मेहनत या हुनर उद्योग का काम*
- *कसरत*

SAMPLE

- *कला और संगीत*
- *हिंदुस्तानी* [11]"

निष्कर्ष

वर्धा शिक्षा योजना गांधीजी द्वारा प्रस्तुत भारतीयों के कल्याणार्थ एक अति महत्वपूर्ण शैक्षिक योजना थी जिसमे एक राष्ट्र को शिक्षित करते हुए स्वावलम्बी, आत्मनिर्भर, विकसित और स्वतंत्र बनाने की केंद्रीय भावना सन्निहित थी। देश की स्वतंत्रता के पूर्व भी जब प्रांतों में कांग्रेस की सरकार बनी थी और स्वतंत्रता के पश्चात् जब देश की सत्ता पर कांग्रेस स्थापित हुई, देश में वर्धा शिक्षा योजना को अपनाने का प्रयास तो किया गया किन्तु उसकी मूलभावना यथार्थ रूप में साकार नहीं हो पाई। *"गांधीजी के जीवन–पर्यन्त चले सत्य के अन्वेषण एवं राष्ट्र के निर्माण हेतु सक्रिय प्रयोगों के माध्यम से लम्बे समय तक विचारों के गहन मंथन के परिणामस्वरूप नयी तालीम का दर्शन एवं प्रक्रिया का प्रादुर्भाव हुआ जो केवल भारतवर्ष ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण मानव समाज को एक नयी दिशा देने में सक्षम था। परन्तु दुर्भाग्यवश इस सर्वोत्तम कल्याणकारी शिक्षा–प्रणाली का राष्ट्रीय स्तर पर भी समुचित प्रयोग नहीं हो पाया जिसके फलस्वरूप आजतक यह देश गांधीजी के सपनों के अनुरूप सार्थक और सही स्वराज प्राप्त करने में असमर्थ रहा।*[12]" बल्कि इसके विपरीत आज तो परिस्थिति ऐसी बनती जा रही है कि स्वतंत्रता के इतने वर्षों पश्चात् भारत पश्चिमी चकाचौंध से दूर होने के स्थान पर शैक्षणिक, सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से पुनः पाश्चात्य साम्राज्यवाद के अधीन निरन्तर जाता दिखाई पड़ रहा है।

"आज भारत की अधिकांश शिक्षा–व्यवस्था राज्याश्रित अथवा पूंजीपतियों पर आश्रित है। अधिकांश राज्याश्रित शिक्षण–संस्थाएँ संसाधन एवं अनुशासन के अभाव में निष्क्रिय हैं। इसलिए गुणवत्ता से युक्त शिक्षा देने में असमर्थ हैं। इसी प्रकार पूँजीपतियों पर आश्रित सभी शिक्षण–संस्थाएं व्यावसायिक रूप में सक्रिय हैं, जो गरीबों की पहुंच से बाहर हैं। उनमें सिर्फ सम्पन्न लोगों के बच्चे ही पढ़ सकते हैं।[13]"

वर्धा शिक्षा योजना तत्कालीन भारतीय परिस्थितियों में देशवासियों को स्वावलम्बन युक्त शिक्षा प्रदान करने और भारतीय जन–मानस हेतु सर्वोत्तम विकल्प थी और परिस्थितियों की आवश्यकता भी। आज देश में जिस प्रकार की परिस्थितियां बन रही हैं और भारत सरकार जिस प्रकार 'आत्मनिर्भर भारत' व 'कौशल भारत' जैसे कार्यक्रमों को प्रोत्साहित कर गति प्रदान कर रहा है, ऐसी परिस्थितियों में गांधीजी द्वारा प्रदत्त वर्धा शिक्षा योजना देश के लिए मार्गदर्शी भूमिका निभा सकती है। आवश्यकता है केवल भारतीय जन–मानस द्वारा दृढ़ इच्छाशक्ति और मजबूत इरादों से वर्धा शिक्षा योजना के बिंदुओं को अपने सामाजिक जीवन में व्यवहृत करने की। जिस दिन भारतीय समाज अपनी सम्पूर्ण ऊर्जा और मनोयोग से वर्धा शिक्षा योजना के बताए बिंदुओं को अपने शैक्षिक जीवन का अंग बना लेगा और अपनी दिनचर्या में उनको आत्मसात् कर लेगा, उस दिन भारत को कौशल युक्त, आत्मनिर्भर, विकसित भारत बनने से कोई रोक नहीं पाएगा। भारत के विकास का मार्ग

स्वयं प्रशस्त होगा और वह पुनः विश्व पटल पर विश्व गुरु बनकर सम्पूर्ण मानवता के कल्याणार्थ मार्गदर्शन प्रदान करेगा।

सन्दर्भ

1 बुनियादी शिक्षा–महात्मा गाँधी, देसाई, मगन भाई (संपादक), अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, द्वितीय संस्करण 1953, पृष्ठ संख्या–50, https://epustakalay.com/book/51723-buniyadi-sixa-by-gandhiji/

2 https://hi.unionpedia.org/बुनियादी शिक्षा।

3 https://hi.wikipedia.org/wiki/वर्धा–शिक्षा–योजना।

4 सिंह, डॉ. वी. बी, पाहुजा, सुधा; भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, मेरठ, आर लाल बुक डेपो, संस्करण–2010, पृष्ठ संख्या–171।

5 बुनियादी शिक्षा–महात्मा गाँधी, देसाई, मगन भाई (संपादक), अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, द्वितीय संस्करण 1953, पृष्ठ संख्या–68, https://epustakalay.com/book/51723-buniyadi-sixa-by-gandhiji/

6 सिंह, डॉ. वी. बी, पाहुजा, सुधा; भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, मेरठ, आर लाल बुक डिपो, संस्करण–2010, पृष्ठ संख्या–171।

7 अग्रवाल, जे सी; भारत में शैक्षिक प्रणाली का विकास, आगरा, आर एस ए इंटरनेशनल, तृतीय संस्करण–2015, पृष्ठ संख्या– 144।

8 बुनियादी शिक्षा–महात्मा गाँधी, देसाई, मगन भाई (संपादक), अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, द्वितीय संस्करण 1953, पृष्ठ संख्या–88, https://epustakalay.com/book/51723-buniyadi-sixa-by-gandhiji/

9 उपरोक्त –पृष्ठ संख्या–91।

10 सिंह, डॉ. वी बी, पाहुजा, सुधा; भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, मेरठ, आर लाल बुक डिपो, संस्करण–2010, पृष्ठ संख्या–171।

11 बुनियादी शिक्षा–महात्मा गाँधी, देसाई, मगन भाई (संपादक), अहमदाबाद, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, द्वितीय संस्करण 1953, पृष्ठ संख्या 67–68, https://epustakalay.com/book/51723-buniyadi-sixa-by-gandhiji/

12 https://www.wikiwand.com/hi/वर्धा–शिक्षा–योजना।

13 https://hi.unionpedia.org/बुनियादी–शिक्षा।

नमूना SAMPLE